पाठ 6. ईमानदार मछुआरा (केवल पढ़ने के लिए)

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में अंतर-वैयक्तिक संबंध का कौशल विकसित करना है ताकि वे विभिन्न व्यक्तियों व प्राणियों से सकारात्मक तरीके से जुड़ने की समझ पैदा कर सकें। यह पाठ मौखिक पठन के लिए है। इस लोककथा में 'बेटी-बेटा एक समान' का भाव उभारा गया है। कहानी में बताया गया है कि किस प्रकार एक मछुआरा अपने भाग्य में होने वाले परिवर्तनों को नवागंतुक पुत्री-धन से जोड़कर देखता है। वास्तव में यह लड़कियों के जन्म पर दुखी होने वाले समाज की मानसिकता पर कुठाराघात है।

अध्यापन संकेत

पाठ का मौखिक वाचन करने के बाद बच्चों से समुद्रतट पर बसे शहरों में मछुआरों के जीवन के बारे में चर्चा करें। बेटे-बेटी में जो अंतर समाज में दिखलाई देता है, उसके दुष्परिणामों की चर्चा करें। मछुआरे ने पुत्री की प्राप्ति को सौभाग्य से जोड़ा, इस ओर इशारा करें। इसके अतिरिक्त, कुछ ऐसी बालिकाओं व महिलाओं की जीवनी से जुड़े ऐसे संस्मरणों का ज़िक्र करें जिनसे प्रेरित होकर कक्षा में न केवल बालिकाओं का आत्मबल मज़बूत हो बल्कि बालकों में भी समाज में महिलाओं को सम्मान देने के प्रति अभी से सोच विकसित हो।